

एनबीएफसी के लिये आउटसोर्सिंग से संबंधित नए नरिदेश

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय रज़िर्व बैंक ने एनबीएफसी (Non-banking financial companies) द्वारा आउटसोर्सिंग के ज़रिये प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं में जोखिमों के प्रबंधन और नयिमावली के संबंध में नए नरिदेश जारी किये हैं और अगले दो महीनों में इन नयिमों का पालन सुनिश्चित किया जाना तय किया गया है।

क्या हैं नए नरिदेश?

- गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ (एनबीएफसी) अपने ग्राहकों के लिये केवाईसी (अपने ग्राहक को जानो) मानदंड तय करना, ऋण की मंजूरी देना, नविश पोर्टफोलियो का प्रबंधन करना और 'इंटरनल ऑडिट' (internal audit) जैसे 'कोर प्रबंधन' कार्यों को आउटसोर्स नहीं कर सकती हैं।
- एनबीएफसी को एक शकियत नविरण व्यवस्था (grievance redressal machinery) के गठन के लिये कहा गया है।
- साथ ही यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि एनबीएफसी की शकियत नविरण मशीनरी आउटसोर्स एजेंसी द्वारा प्रदान की गई सेवाओं से संबंधित मामले भी नपिटायणी।
- वित्तीय सेवा प्रदाताओं की संदगिध गतविधियिँ पर नज़र रखने और वित्तीय लेन-देन की रपिर्ट बनाने के दायित्व का पालन एनबीएफसी को ही करना होगा।

गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ (एनबीएफसी) क्या हैं?

- गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनी उस संस्था को कहते हैं जो कंपनी अधनियिम 1956 के अंतरगत पंजीकृत है और जिसका मुख्य काम उधार देना तथा वभिन्न प्रकार के शेयर्स, प्रतभूतयिँ, बीमा कारोबार तथा चटिफंड से संबंधित कार्यों में नविश करना है।
- गैर बैंकगि वित्त कंपनयिँ भारतीय वित्तीय प्रणाली में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह संस्थाओं का वजातीय समूह है (वाणजियिक सहकारी बैंकों को छोड़कर) जो वभिन्न तरीकों से वित्तीय मध्यस्थता का कार्य करता है जैसे:

- ◆ जमा स्वीकार करना।
- ◆ ऋण और अग्रमि देना।
- ◆ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में नधियिँ जुटाना।
- ◆ अंतमि व्यय कर्त्ता को उधार देना।
- ◆ थोक और खुदरा व्यापारयिँ तथा लघु उद्योगों को अग्रमि ऋण देना।

'प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ'?

- जनि गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ की परसिंपत्तयिँ का आकार पछिले लेखापरीक्षा के अनुसार 100 करोड़ रुपए या उससे अधिक हो उन्हें प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ माना जाता है।
- इस प्रकार से वर्गीकरण किये जाने का तर्क यह है कि इन गैर-बैंकगि वित्तीय कंपनयिँ की गतविधियिँ का हमारे देश की वित्तीय-स्थरिता पर अत्यधिक प्रभाव देखने को मलिया।